❶ ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य संदेश टीवी
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

वर्ष 45, अंक 28 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 9 मई, 2022 से रविवार 15 मई, 2022
विक्रमी सम्वत् 2079 सृष्टि सम्वत् 1960853123
दयानन्दाब्द : 199 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक 1 मई, 2022 को नई दिल्ली में सम्पन्न

आजादी के अमृत महोत्सव पर होंगे राष्ट्रीय, प्रान्तीय एवं ईकाई स्तर पर अनेक आयोजन

महर्षि दयानन्द जन्म द्विशताब्दी एवं आर्य समाज के 150 वें स्थापना दिवस समारोह (2024-25)

कार्ययोजना समिति के मार्गदर्शक होंगे जे.बी.एम. चेयरमैन श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक में श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी का हुआ भव्य स्वागत

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में हर व्यक्ति, हर कार्यकर्ता अपने आपको टीम समझे और लीडर के रूप में काम करे तो हम इन आयोजनों को उपयोगी और भव्य बनाने में होंगे कामयाब - सुरेन्द्र कुमार आर्य, चेयरमैन, जे.बी.एम. ग्रुप

महर्षि दयानन्द जी के 200वें जन्मोत्सव के लिए 200 की संख्या पर करें विशेष फोकस - 200 शोभायात्रा, 200 वाहन, 200 ऐतिहासिक स्थान, 200 संन्यासी, 200 वानप्रस्थी, 200 ब्रह्मचारी - होंगे कार्यक्रम के केन्द्र बिन्दु - स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सांसद

महर्षि दयानन्द जन्म द्विशताब्दी महोत्सव के लिए शीघ्र तैयार होगी विस्तृत कार्ययोजना - दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के उपरान्त प्रान्तीय, जिला एवं ईकाई स्तर पर भी होंगी आयोजन सम्बन्धी कार्यशालाएं - सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक सभा

आर्य समाज की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अंतरंग बैठक 1 मई 2022 को आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के सत्संग हॉल में महत्वपूर्ण निर्णयों के साथ संपन्न हुई। इस अवसर पर सभा प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी की अध्यक्षता में मंत्री श्री प्रकाश जी आर्य, उप मंत्री श्री विनय आर्य, राजस्थान सभा के प्रधान स्वामी सुमेधानंद सरस्वती जी, बंगाल सभा के प्रधान श्री दीनदयाल गुप्त जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, हरियाणा सभा के प्रधान मास्टर रामपाल जी, पंजाब सभा के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी, राजस्थान सभा के मन्त्री श्री जीववर्धन शास्त्री जी, श्री किशनलाल गहलोत जी, उत्तराखण्ड से श्री सुधीर गुलाटी, छत्तीसगढ़ के प्रधान आचार्य अंशु देव जी, गुजरात सभा के मन्त्री श्री रतनशी भाई वेलानी जी, बिहार सभा के प्रधान डॉ. संजीव कुमार चौरसिया जी, मन्त्री श्री व्यास नंदन शास्त्री जी, महाराष्ट्र सभा के प्रधान डॉ. योग मुनि जी, कर्नाटक सभा के उपमन्त्री श्री ऋषि मित्र जी, उत्तर प्रदेश सभा के प्रधान श्री देवेंद्र पाल वर्मा जी, असम सभा के मन्त्री श्री प्रभाकर शर्मा जी, हिमाचल सभा के प्रधान श्री प्रबोध चंद्र सूद जी, कोषाध्यक्ष श्री सुधीर आर्य जी, जम्मू कश्मीर सभा के मन्त्री श्री अरुण आर्य जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा से विशेष आमंत्रित सदस्यों के रूप में कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल जी, उप प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य जी, श्री शिव कुमार मदान जी, श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी, मन्त्री श्री सुखबीर सिह आर्य जी, श्री कृपाल सिंह आर्य जी,

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान के रूप में प्रथम बार अन्तरंग सभा बैठक में पधारने पर स्वामी सुमेधानन्द जी को पीतवस्त्र पहनाकर सम्मानित करते हुए प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी। साथ में हैं श्री विनय आर्य जी एवं श्री दीनदयाल गुप्त जी

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा में मंचस्थ अधिकारीगण - श्री प्रकाश आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री सुरेशचन्द्र आर्य, श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य, स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती एवं श्री धर्मपाल आर्य

- शेष चित्र एवं समाचार पृष्ठ 4 एवं 6 पर

3 मई, 2022

सार्वदेशिक सभा के एकता प्रकरण में एक महत्वपूर्ण कदम

माननीय कोर्ट कमिश्नर्स जस्टिस विजेन्द्र जैन, जस्टिस आर. एस. सोढ़ी एवं जस्टिस पी.सी. जैन के प्रयासों से बनी समिति

श्री सुरेशचन्द्र आर्य प्रधान एवं श्री विट्ठल राव बने मन्त्री

नीतिगत निर्णय लने के लिए बनी 5 सदस्यीय कोर कमेटी

श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी, स्वामी आर्यवेश जी, श्री प्रकाश आर्य जी, श्री विट्ठल राव जी एवं श्री विनय आर्य जी होंगे कोर समिति के सदस्य। यह कोर समिति शीघ्र सार्वदेशिक सभा के निर्वाचन हेतु सूची तैयार करने का कार्य करेगी।

कुछ बिन्दुओं पर माननीय कोर्ट कमिश्नर्स का निर्णय प्राप्त होना लम्बित है। अत: पूर्ण समाचार अगले अंकों में प्रकाशित किया जा सकेगा - सम्पादक

देववाणी-संस्कृत

पृथिवी-धारक

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु।। - अथर्व. 12/1/1
ऋषिः **अथर्वा।।** देवता - **भूमिः।।** छन्दः **त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **बृहत् सत्यम्**= महान् सत्य! **उग्रं ऋतम्**= कठोर सत्याचरण **दीक्षा** = व्रतग्रहण **तपः** = कष्टसहन **ब्रह्म** = अनुभव-ज्ञान **यज्ञः** = निःस्वार्थ कर्म-ये छह गुण **पृथिवीं धारयन्ति**=पृथिवी को धारण कर रहे हैं। **भूतस्य भव्यस्य पत्नी**= भूत और भव्य की रक्षा करने वाली **सा नःपृथिवी** = वह हमारी **मातृभूमि नः** = हमारे लिए **उरुं लोकम्**=विस्तृत लोक को, विशाल क्षेत्र को **कृणोतु**= करे।

विनय - हे प्रभो! जिस भूमि पर हम रहते हैं वह भूमि हमें उन्नत करे, हमें विशाल बनाये। हम इसे धारण करने का पूरा यत्न कर रहे हैं। जब कभी हम मोहवश यह समझ लेते हैं कि कूटनीति अर्थात् झूठ, कपट, चालाकी आदि से अपने देश, राष्ट्र व मातृभूमि की धारणा होगी तब हम भूले होते हैं। पृथिवी को धारण करने वाले जो आवश्यक गुण हैं, उनमें तो सबसे पहला सत्य है। वह महान् सत्य, जिससे विश्व ब्रह्माण्ड स्थित है, हमारी भूमि को भी वही धारण किये हुए है और केवल सत्य का ज्ञान ही नहीं, किन्तु उसका आचरण राष्ट्र को स्थिर रखता है। हमें कठोरता के साथ, तेजस्विता के साथ, पूरा-पूरा सत्याचरण करना चाहिए। हममें जितना सत्य होगा, जितनी उग्र सत्यचर्या होगी, जितना हम दृढ़ संकल्प होकर ग्रहण किये व्रतों को निबाहने वाले होंगे, जितने हम राष्ट्र के लिए कष्ट सह सकेंगे, जितना हमें अनुभूत ज्ञान होगा और जितना हम निःस्वार्थ होकर परोपकार वृत्तिवाले होंगे; उतना ही यह हमारा देश अचलतया स्थित रहेगा। भूमि को कोई राजा, शासन या प्रजा नहीं धारण करते, किन्तु वहाँ के वासियों में स्थित ये छह गुण ही एकमात्र भूमि के धारण करने वाले होते हैं। यह जानकर इन गुणों को हम अपने में लाने का पूरा यत्न करते हुए ही यह प्रार्थना करते हैं कि हमारी प्यारी मातृभूमि हमें विस्तृत और विशाल बनाये। हम इन गुणों की साधना द्वारा अपनी मातृभूमि को धारण करें और यह भूमि हमारे भूत और भव्य की रक्षा करने वाली होकर हमें उन्नत करे। हम अपने भूत के आधार पर ही भविष्य में उन्नत हो सकते हैं और जितना ही हम अपने राष्ट्र के साथ एक होंगे, तादात्म्य करेंगे, उतना दूर तक हम अपने राष्ट्र के भूत में प्रविष्ट होंगे और उतना ही अपने भविष्य को उज्ज्वल और महान् बना सकेंगे। इस प्रकार मातृभूमि की हमारी उपासना हमें सुविशाल कर दे। राष्ट्र का व्यक्ति मातृभूमि के जीवन और मरण के साथ ही जीता या मरता है। मातृभूमि की अनन्यभाव से उपासना मनुष्य को कितनी विस्तृत आयु (जीवन) प्रदान कर देती है! तब मनुष्य क्षुद्र बातों से कितना ऊँचा हो जाता है! आओ, हम आज से उन सत्य आदि महान् (बृहत्) गुणों को अपने में धारण करते हए अपनी मातृभूमि की सच्ची पूजा किया करें जिससे यह भगवती मातृभूमि हमारे भूत के दृढ़ चट्टान पर हमारे उज्ज्वल भव्य की रचना को सुरक्षित करती हुई हमारे लिए उतने विशाल क्षेत्र को खोल दे-उस भूत और भव्य को व्याप्त कर लेने वाले विस्तृत लोक को हमारा बना दे।

वेद-स्वाध्याय

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

आतंकवादी बनने के पीछे की मानसिकता

करांची हमले के बाद फिर जिहाद पर बहस

....साल 2001 से पहले पूरी दुनिया में यही माना जाता था कि अशिक्षा, गरीबी आम मुसलमान को आतंकवादी बना देती है। इसके अलावा चेचन्या में साल दो हजार तक इस्लामी चरमपंथी संगठनों द्वारा रूसी सैनिकों के ख़िलाफ़ महिला आत्मघाती हमलावरों का इस्तेमाल किया गया था। इन आत्मघाती बम धमाकों में शामिल होने वाली ज्यादातर महिलाएं वो थीं जिनके पति, भाई या पिता को रूसी सैनिकों ने मारा था। इसलिए उनके लिए ब्लेक विडो यानि काली विधवाएँ जो हमला कर रही शब्द का प्रयोग किया गया। लेकिन जब अमेरिका में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हमला हुआ तो ये विषय पलट गया और इस पर शोध आरम्भ हुआ। कारण हमला करने वाले सभी आतंकी डॉक्टर, इंजीनियर और उच्च शिक्षा की डिग्री लिए छात्र थे। दुनिया भर के तमाम विश्लेषक इस सवाल की पड़ताल में जुट गये, वो जानना चाहते थे कि किसी मुसलमान में ऐसी क्या बात होती है कि वह जिहादी बन जाता है।.....

नाम था शारी बलोच, उम्र भी यही कोई 30 साल थी। अनपढ़ नहीं थी, बल्कि साल 2014 में पाकिस्तान की अल्लामा इक़बाल ओपन यूनिवर्सिटी से बी. एड. और 2015 में बलूचिस्तान यूनिवर्सिटी से जूलॉजी में एमएससी की थी। लेकिन हाल ही कराची यूनिवर्सिटी के परिसर में चाइनीज़ लैंग्वेज सेंटर के पास एक आत्मघाती हमले में खुद को उड़ा लिया। इस आत्मघाती हमले में कई चाइनीज टीचर्स की मौत हो गई कुछ घायल भी हुए।

शारी बलोच के इस आत्मघाती हमले ने, दो दशकों बाद एक सवाल को फिर से जिन्दा कर दिया कि आतंकवादी कौन है? एक आम इन्सान कैसे आतंकवादी बन जाता है? आखिर ऐसे क्या कारण होते हैं जो खुद को ही बम से उड़ा देते हैं?

असल में इन सवालों पर कई शोध हुए। यहाँ तक कि अनेकों बड़े मनोचिकित्सक आतंकवादियों के बीच भी रहे। साल 2001 से पहले पूरी दुनिया में यही माना जाता था कि अशिक्षा, गरीबी आम मुसलमान को आतंकवादी बना देती है। इसके अलावा चेचन्या में साल दो हजार तक इस्लामी चरमपंथी संगठनों द्वारा रूसी सैनिकों के खिलाफ़ महिला आत्मघाती हमलावरों का इस्तेमाल किया गया था। इन आत्मघाती बम धमाकों में शामिल होने वाली ज्यादातर महिलाएं वो थीं जिनके पति, भाई या पिता को रूसी सैनिकों ने मारा था। इसलिए उनके लिए ब्लेक विडो यानि काली विधवाएँ जो हमला कर रही शब्द का प्रयोग किया गया।

लेकिन जब अमेरिका में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हमला हुआ तो ये विषय पलट गया और इस पर शोध आरम्भ हुआ। कारण हमला करने वाले सभी आतंकी डॉक्टर इंजीनियर और उच्च शिक्षा की डिग्री लिए छात्र थे। दुनिया भर के तमाम विश्लेषक इस सवाल की पड़ताल में जुट गये, वो जानना चाहते थे कि किसी मुसलमान में ऐसी क्या बात होती है कि वह जिहादी बन जाता है।

इस शोध में सबसे आगे आये ब्रिटेन में अपराध शास्त्र के प्रोफ़ेसर 'एंड्रयू सिल्क' उनका अध्यन शुरू हुआ। किन्तु इस मामले में शोध कर रहे मनोचिकित्सकों के पास भी जानकारियाँ बहुत कम थी और वे आतंकवादियों की आत्मकथाओं और मीडिया में आए उनके इंटरव्यू से काम चला रहे थे। अंत में एंड्रयू ने लिखते हुए कहा, "आतंकवादी बनने की कोई प्रामाणिक जानकारी नहीं है, बस इतना कहा जा सकता है कि किसी अनजान व्यक्ति की जान लेने के लिए आपके अंदर पागलपन होना चाहिए" यानि शोध का अंत ये था कि सभी आतंकवादी पागल है। ये राजनीतिक नहीं बल्कि सिर्फ दिमाग़ से जुड़ी प्रोब्लम है।

इस शोध पर सवाल खड़े होने लगे। साथ ही कुछ विशेषज्ञ ऐसे सबूत लेकर आये कि सारे जिहादी मनोरोगी नहीं हैं। इसके बाद सामने आये आंतकवाद से जुड़े मामलों में विशेषज्ञता को लेकर दुनिया भर में मशहूर मनोचिकित्सक 'मार्क सेजमैन'। ये वो मनोचिकित्सक थे, जिन्होंने 1980 में अफगानिस्तान में हिंसा में शामिल रहे 'जिहादियों' के साथ वक़्त बिताया था।

मार्क सेजमैन ने लिखा- इस हमले के बाद पूरा देश एक नई स्थिति के लिए तैयार होने लगा था। इस दौरान सरकार जानकारों को इस दुश्मन को बेहतर तरीक़े से समझने के काम में लगाना चाहती थी। हर किसी के लिए ये समझना मुश्किल था! आखिर क्यों कुछ लोग अपनी जान देकर तीन हज़ार लोगों को मौत की नींद सुला गये।

सेजमैन ने ये भी कहा कि इस काम में अमेरिका ने रकम तो खूब झोंकी गई, लेकिन नतीजे ठोस नहीं मिले। इसके बाद साल 2003 में अमेरिकी सरकार ने आतंकवाद से जुड़े मामलों के विशेषज्ञों की एक आंतरिक टीम तैयार करने का फ़ैसला किया। शोध के लिए नए लोगों को सीधे यूनिवर्सिटी स्तर से भर्ती किया गया।

इसमें भी हुआ ये कि जो विद्वान इस काम में जुटे थे, उनके पास सब कुछ समझने का तरीक़ा और काबिलियत थी, लेकिन दुर्भाग्य से उनके पास कोई तथ्य यानी जानकारी नहीं थी। यानि साल गुजरते गये। आतंकी हमले होते रहे, लेकिन ठोस परिणाम सामने नहीं आ रहे थे।

इसी बीच एक विशेषज्ञ ने नाम बदलकर मुसलमान बनकर खुद को नफ़ीस बताते हुए सीरिया में जंग लड़ रहे अल नुसरा और इस्लामिक स्टेट के आतंकियों से स्काइप और दूसरे मैसेजिंग ऐप के ज़रिए बात की। जब उनका इंटरव्यू किया, तो उन्होंने कहा, 'वो पूरी दुनिया में शरिया लागू करना चाहते हैं'।

मामला काफी सुलझ चुका था। किन्तु अभी भी एक सवाल बाकी था। वो यह कि इतने बड़े स्तर पर लोग कैसे एकजुट होते हैं? उनके पास हथियार कहाँ से आते हैं? क्या सिर्फ यह मान लिया जाये कि इस्लामिक स्टेट और अल कायदा में क्या लोग सिर्फ नौकरी के लिए जुड़ रहे हैं? अगर ऐसा है, तो आत्मघाती हमलावर खुद को उड़ा देना, सामने वाले की गर्दन इस कारण रेत देना कि वह काफ़िर है? या मजहब का नाम लेकर मासूम बच्चियों का बलात्कार करना जैसे कारणों की तलाश तेज हुई।

अचानक टेररिस्ट साइकॉलजी को कुछ ऐसे सबूत मिले, जिन्होंने इस मामले को सुलझा दिया। उन्होंने बताया कि सभी मुसलमान एक ही उम्माह के हिस्से हैं, तो एक खिलाफत भी होनी चाहिए, जिसमें सभी अंतरराष्ट्रीय सीमाएं खत्म होती हों और एक शरीयत लागू हो। इसके बाद शोध हुए घटनाओं को जोड़ा गया और निष्कर्ष के तौर पर ब्रिटेन में तैयार 'रैडिक्लांइजेशन ऑफ मुस्लिम' इस टाइटल वाले डॉक्यूमेंट्स में कहा गया कि आज करीब 62 प्रतिशत आतंकी ऐसे हैं जिनके पास अच्छी-खासी योग्यता है। जिनका फैमिली बैकग्राउंड भी काफी अच्छा है।

- शेष पृष्ठ 7 पर

बाल बोध

जीवन में संगति का महत्व

.....कुसंग का अर्थ है नास्तिक का संग, पापी का संग, इनसे सदा बचो। सत्संगति शक्ति देती है, कुसंगति अशान्ति देती है। व्यक्ति के विकास में कुसंग बाधक बनता है। व्यक्ति के अन्दर की दया, मौन और पवित्र बुद्धि, चेहरे का लावण्य अन्दर की शर्म, क्षमा-भाव और ऐश्वर्य आदि परमात्मा के दिए हुए वरदान हैं। इनको छीनती है बुरी संगति। अन्दर से शर्म गई तो व्यक्ति गिरता चला जाएगा। अन्दर का सत्य, अन्दर की पवित्रता चली जाती है कुसंग से।...इंसान के सर्वनाश का कारण बनती है कुसंगति। वात्सल्य और करुणामयी कैकेई को मन्थरा की कुसंगति मिल जाने से उसके मन की स्थिति बदल गई। रामजी के प्रति बहुत लगाव था, मगर बुरी संगति के कारण मन में वैर उत्पन्न हुआ और पूरी अयोध्या के लिए शोक पैदा कर दिया। ....

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहते हुए वह जैसे लोगों का संग करता है, वैसा ही प्रभाव उसके जीवन पर पड़ता है। कहा जाता है–**'कोयले की कोठरी में कितना ही सयाना जाए'।** अर्थात् कोयले की खान में उतरें और हाथ स्वच्छ रहें यह सम्भव नहीं है। आप कितनी भी सावधनी बरतें, कहीं-न-कहीं दाग जरूर लगेगा। इसी प्रकार आप कितनी भी कोशिश करें, संग के प्रभाव से बच नहीं सकते, प्रभाव अवश्य पड़ेगा। व्यक्ति कितना भी बचना चाहे, बच नहीं सकता।

संसार में भिन्न-भिन्न वृत्तियों के लोग हैं, व्यक्ति जैसे लोगों का संग करता है, वैसी उसकी प्रवृत्ति बन जाती है। इस जीवन में सब कुछ हमारा चाहा हुआ नहीं होता। व्यक्ति जो होना चाहता है उसमें बाधक बनती है बहुत-सी अनचाही सामाजिक परिस्थितियां। समाज में आप अकेले नहीं रह सकते, आपको सबके साथ की जरूरत है। इस गलत-फहमी में मत रहना कि तुम्हारा काम अकेले चल सकता है, तुम्हें हमेशा समाज की जरूरत पड़ेगी। स्वयं को इतना उफंचा महान मत मान लेना कि 'मैं नहीं रहा तो दुनिया के काम रुक जाएंगे' दुनिया में प्रलय आ जाएगी। तुम रहो-न-रहो, दुनिया के काम चलते रहेंगे। समाज में रहते हुए तुम्हारा काम अकेले नहीं चलेगा। जीवन चलता है एक-दूसरे के तालमेल से, तुम किसी के सहयोगी बन जाओ, कोई तुम्हारा सहयोगी बन जाए, इसी का नाम जीवन है।

व्यक्ति के विकास में दूषित वृत्ति के लोग बाधा बनते हैं और व्यक्ति जो होना चाहता है, हो नहीं पाता। इसलिए निश्चय करो कि तुम्हारी उन्नति में जो बाधक हैं, उनका संग नहीं करना, वह तुम्हारे मित्र नहीं हो सकते। जिनकी संगति से जीवन में विकास हो, घर में प्यार और मन में उत्साह -उल्लास और शान्ति आए उनसे मित्रता करना। जल जैसे पात्रा में रखा जाए, उसका रंग वैसा ही दिखाई देता है। ऐसे ही व्यक्ति जैसी संगति में रहता है उसके अनुसार उसका जीवन ढल जाता है। विलासी का संग होगा तो विलासी हो जाएगा। ज्ञानी, ध्यानी और सज्जनों का आदर्श सामने हो तो व्यक्ति के अन्दर धैर्य, क्षमा, कोमलता और सज्जनता आएगी। गन्दगी के ढेर के पास जाओगे तो सुगन्ध नहीं आएगी। बुरे लोगों का संग करोगे तो उनकी बुराइयों की दुर्गन्ध आपकी जिन्दगी को बर्बाद कर देगी और अच्छे लोगों की अच्छाई की सुगन्ध से आपकी जिन्दगी महक उठेगी।

आचार्य चाणक्य का कथन है–

योग्य स्वामी के पास आकर अयोग्य वस्तु भी सुंदरता बढ़ाने वाली हो जाती है। किन्तु अयोग्य के पास जाने पर योग्य काम की वस्तु भी हानिकारक हो जाती है। आप जैसे लोगों के बीच बैठेंगे, आपके विचार और भावनाएं वैसी ही बन जाएंगी। बुरे लोगों का दुष्प्रभाव बहुत जल्दी काम करता है। चुनकर खाते हो, चुनकर पहनते हो तो चुनकर अच्छी किताबें अपने पास रखो और उनके सुन्दर वाक्य प्रतिदिन पढ़ो। जिससे विचारों में पवित्राता आए। पवित्रा विचारों की खशबू आपको महकाती रहेगी। जैसे किताबों में रखे गुलाब महक देते हैं। अकेले रह लेना, मगर गलत लोगों में मत बैठना। अविवेक, निर्दयता, हिंसा, तिकड़म लगाना, योग्य व्यक्ति को टांग लगाकर गिराना, बुरी संगति का परिणाम है।

जो यह कहे कि चोरी करना पाप नहीं, चोरी करते पकड़े जाना पाप है, जो गुनाहगार होने में शर्मिन्दगी महसूस नहीं करता, ऐसे लोग समाज में बुराई को बढ़ाने का कार्य करते हैं। मासूम व्यक्ति भी ट्रेंड हो जाता है बुरी संगति में। बीस साल तक बच्चे को अच्छे संस्कार देकर राम बनाने की कोशिश करने पर भी वह राम नहीं बनता, मगर बीस दिन की बुरी संगति उसे रावण बनाने में कसर नहीं छोड़ती। बुराई का रंग जल्दी चढ़ता है, इसलिए कुसंग से सदा सावधान रहें।

कुसंग का अर्थ है नास्तिक का संग, पापी का संग, इनसे सदा बचो। सत्संगति शक्ति देती है, कुसंगति अशान्ति देती है। व्यक्ति के विकास में कुसंग बाधक बनता है। व्यक्ति के अन्दर की दया, मौन और पवित्र बुद्धि, चेहरे का लावण्य अन्दर की शर्म, क्षमा-भाव और ऐश्वर्य आदि परमात्मा के दिए हुए वरदान हैं। इनको छीनती है बुरी संगति। अन्दर से शर्म गई तो व्यक्ति गिरता चला जाएगा। अन्दर का सत्य, अन्दर की पवित्राता चली जाती है कुसंग से।

- शेष पृष्ठ 7 पर

स्वास्थ्य रक्षा

उत्तम स्वास्थ्य के सूत्र एवं रोगों से बचाव

आर्य संदेश के इस अंक में स्वास्थ्य रक्षा स्तंभ में हम आपको बता रहे हैं कुछ वे उपयोगी प्रचीन नुस्खे जिनको अपनाकर आप जटिल बीमारियों से स्वयं को ओर अपने परिवार स्वस्थ रख सकते हैं। लेकिन हम यहां पर यह अवश्य स्पस्ट करना चाहते हैं कि ये पुराने वैद्यों द्वारा प्रचलित घरेलू नुस्खे हैं, अतः अगर किसी को कोई खतरनाक बीमारी हो तो कृपया अपने चिकित्सक का परामर्श और उपचार ही प्रयोग में लाएं और स्वस्थ रहें। - सम्पादक

-: चर्म रोग :-

1. चिरायता 3ग्राम + कुटकी 3ग्राम चूर्ण रात्रि में सुबह नास्ते से 1-2 घंटे पहले सेवन करें। उबालकर व छानकर (100 ग्राम पानी 50ग्राम शेष काढ़ा) पीवें।
2. सरसों तेल 200ग्राम + 40ग्राम नीम की कोमल पत्तियों को काले होते तक उबालें छानकर एग्जिमा पर ठीक होते तक लावें, चना प्रतिदिन खावें।
3. प्रतिदिन 4 बेलपत्र और 3 काली मिर्च चूर्ण मिलाकर (खाली पेट)।
4. जैतून तेल का मालिश या नारियल तेल कपूर मिलाकर।
5. गाय का गोबर या गोमूत्र दोनों स्नान से पहले त्वचा पर लगावें।

-: गैस :-

1. भोजन के बाद पानी ना पीयें।
2. 4ग्राम अजवायन + कालानमक 1 ग्राम +5ग्राम गुड पकाकर भोजन के बाद सुबह-शाम सेवन करें।
3. 100ग्राम मठ्ठे (छाछ) में 2ग्राम अजवायन 1ग्राम कालानमक भोजन के बाद प्रातः लें।
4. लहसुन की 2 कली मुनक्का के साथ चबाकर खायें तुरन्त आराम।
5. हमेशा गर्म पानी का सेवन करें। बालहरड़ा 2 नग भोजन के बाद चूसें।

-: अम्लपित्त- पित्त विकार :-

1. गुलर (डूमर) के पत्ते + 1 चम्मच मिश्रि को पीसकर 50ग्राम पानी मिलवा कर प्रातः खाली पेट सेवन करें।
2. (1) भोजन के बाद प्रातः सायं एक-एक लौंग चूसने से नियंत्रित होता है।
2. चार लौंग पीसकर पानी में घोलकर पिलाने से पित्त ज्वर कम होता है।
3. अम्लपित्त वालों को चाय की जगह अजवायन 3ग्राम + 1 ग्राम कालानमक भोजन के बाद लेना चाहिये।
4. दोपहर भोजन के 40 ग्राम मूली पत्ते का रस (4पत्ते) + मिश्रि 1 चम्मच मिलाकर सेवन सर्वोत्तम है।
5. आध चम्मच छोटी हरड़ा का चूर्ण + पुराना गुड़ मिलाकर सेवन करें। रात्रि भोजन के 40 मि. बाद पानी के साथ सेवनीय।
6. प्रातः दुब का रस 3 चम्मच + 1 चम्मच मिश्रि नास्ते के बाद लेवें।
7. छाछ (मठ्ठे) में अजवायन चूर्ण 2 ग्राम + जीरा चूर्ण 2ग्राम + कालानमक 2 ग्राम + जीरा चूर्ण 2ग्राम + कालानमक 2ग्राम दोपहर में पीवें।

विशेष - भोजन के बीच कम से कम पानी पीवें, भोजन के बाद बिल्कुल भी पानी न पियें, गर्म वस्तु का सेवन ना करें। 45 मि. बाद जल पियें। पित्त विकार के लिए चिरायता का काटा सबसे प्रभावकारी है। अजवायन 4 ग्राम + 1ग्राम कालानमक + गुड़ बनाकर पीने से पित्त हमेशा नियंत्रित रहता है।

एक्युप्रेशर- पिताशय, अग्नाशय, स्टोमक, लिवर, हार्ट, कीडनी पाइंट दबावें।

प्राणायाम- खेचरी मुद्रा के साथ अनुलोम-विलोम, भ्रामरी शीतकारी प्राणायाम उपयोगी।

आसन- धनुरासन, सर्वांगासन, योगमुद्रासन, मयूरासन,।

-: गैस कब्जः -

1. अजवायन 3ग्राम + कालानमक 1ग्राम + गुड 5ग्राम, काढ़ा पीवें।
2. भोजन के बाद रात्रि में बालहरड़ चूसें (48 घण्टा गो-मूत्र में भीगोकर सुखा लें।

-: पेट साफ :-

1. अश्वगंधा 5 ग्राम + शतावर चूर्ण 5 ग्राम मिलाकर रात्रि में सोते समय लें।
2. 50 ग्राम अजवायन, 100ग्राम मेथी, 50ग्राम कालीजीरा अलग-अलग पीसें (भुनकर) 1 चम्मच गर्म पानी के साथ भोजन के 10 मिनट के बाद लेवें।

-: वायु :-

1. करंज बीज 1 नग गुड़ 5ग्राम मिलाकर सेवन करें।
2. नींबू रस दो चम्मच + एक गिलास पानी + 1 ग्राम कालानमक मिलाकर पिलायें।
3. आजवायन आध चम्मच + कालानमक 1 ग्राम उबालकर पिलावें या सामान्य पानी के साथ पी लें, तुरन्त आराम भोजन के 45 मिनट बाद पानी पीवें।
4. 100 ग्राम मट्ठा में 2 ग्राम भुना हुआ जीरा + 2 ग्राम काला नमक मिलाकर पीवें।

-: कफः -

1. बादाम 100 ग्राम, खाण्ड 50ग्राम कालीमिर्च 20ग्राम सभी का चूर्ण बनाकर 1 चम्मच भोजनोपरान्त सेवन करें।
2. 200ग्राम दूध में दो पीपली का चूर्ण डालकर खूब उबलकर गुनगुना रोगी को पिलायें।
3. भोजन के बाद 2 बालहरड़ चूसें और गुड़ खावें। 5ग्राम गुड़ + 2 ग्राम सोंठ + 5ग्राम बाल हरड़ से लाभकारी।
4. पोदिना रस 10ग्राम +10ग्राम गर्म पानी में मिलाकर लेवें। सोते समय नाक में 3 बूंद सरसों तेल डालें।
5. विशेष - सूत्रनेती- जलनेति अत्यधिक उपयोगी है। अजवायन 4 ग्राम + 2ग्राम काला नमक + 5ग्राम गुड़ का काढ़ा बनाकर पीवें। 5 कली लहसुन की चटनी खावें।
6. अडूसा ढ़ाई पत्ते + काली मिर्च ढ़ाई नग, काढ़ा पीवें (सुबह-शाम)।
7. अदरक रस + शहद 1+1 चम्मच सुबह-शाम लेवें तथा गुड़ का सेवन करें।
8. राई 500 मिलि. ग्राम, सेंधानमक 2 ग्राम व 2 ग्राम मिश्री सुबह-शाम लेवें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की अन्तरंग सभा बैठक ....

अमृत महोत्सव के अवसर पर करें प्रान्तीय स्तर पर बड़े-बड़े आयोजन : आर्य शिक्षण संस्थानों, डी.ए.वी.विद्यालयों, गरुकुलों एवं आर्यसमाजों के माध्यम से निकालें तिरंगा यात्राएं

- प्रकाश आर्य, मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

आर्यसमाज की युवा शक्ति की वृद्धि के लिए आर्य वीर दल एवं वीरांगना दल के प्रान्तीय स्तर पर विशेष शिविरों के हों आयोजन - 2025 के आर्य महासम्मेलन में दिल्ली से 5000 गणवेशधारी आर्यवीर होंगे सम्मिलित - विनय आर्य, उपमन्त्री

हरियाणा में आर्य वीर दल को मजबूत करने के लिए होंगे और कार्य: इस वर्ष लग रहे हैं - 60 प्रशिक्षण शिविर - मा. रामपाल

श्री वीरेंद्र सरदाना जी, श्री सुरेश चंद गुप्ता जी एवं अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के महामन्त्री श्री जोगेंद्र खट्टर जी, केन्द्रीय सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सुरेन्द्र रैली, महामन्त्री श्री सतीश चड्डा, इत्यादि अनेक महानुभाव उपस्थित थे।

बैठक का आरंभ ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना मंत्रों के उच्चारण के साथ हुआ। दिवंगत आर्य जनों की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की गई । मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी ने 25 अप्रैल 2021 की ऑनलाइन बैठक की कार्यवाही पढ़कर सुनाई जिसकी सभी उपस्थित अधिकारियों ने पुष्टि की। श्री प्रकाश आर्य जी ने देश की आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने पर भारत सरकार द्वारा मनाए जाने वाले अमृत महोत्सव की बात करते हुए कहा कि देश की आजादी में आर्य समाज का बहुत बड़ा योगदान है इसलिए समूचे आर्य समाज को अपने-अपने प्रांतों में आजादी के अमृत महोत्सव को इस तरह से मनाना चाहिए जिससे आर्य समाज के योगदान से जन-जन परिचित हो सके। इसके लिए अपने-अपने स्तर पर योजना बनाकर आयोजन करें और राज्य सरकारों के अधिकारी तथा नेताओं को भी आमंत्रित करें, सबको यह पता चल सके कि आर्य समाज का आंदोलन और बलिदान आजादी में सबसे आगे था। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान एवं सांसद स्वामी सुमेधानंद जी ने कहा कि अमृत महोत्सव के आयोजन को राष्ट्रीय स्वरूप देने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जाना चाहिए। इसके बाद प्रांतीय स्तर पर और जिला स्तर पर भी कार्यशालाएं आयोजित हों। इसमें समय दानी सदस्यों की सूची बनाई जाए जो लोग 2 साल 1 साल या 1 महीने का समय दें उनको आर्य समाज के प्रचार प्रसार के लिए आगे लाया जाए। इस तरह से आर्य समाज का विस्तार होगा अभी पिछले दिनों जिस तरह से सिख समाज को सरकार ने 500 करोड़ का योगदान दिया है इस तरह से आर्य समाज को भी अपने कार्य योजना को विस्तृत करते हुए सरकार से योगदान लेना चाहिए।

श्री वाचोनिधि आर्य जी ने आर्य समाज के प्रचार-प्रसार की बात रखते हुए कहा की डीडी न्यूज़ पर समय-समय पर परिचर्चा रखनी चाहिए जिससे जन-जन तक आर्य समाज की बात पहुंचे। श्री देवेंद्र पाल जी ने समाचार पत्रों में समाचार और आर्टिकल प्रकाशित करने की बात कही। कार्यक्रम को भव्य बनाने के लिए आर्य समाजों को मीडिया के सभी माध्यमों - प्रिंट, इलेक्ट्रोनिक एवं सोशल मीडिया का उपयोग करना चाहिए।

सभा की इस अंतरंग बैठक में विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में जेबीएम ग्रुप के चेयरमैन और अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आर्यसमाज एक सशक्त संगठन है औरा इसकी शक्ति महर्षि दयानंद सरस्वती की शिक्षाएं एवं वैदिक विचार हैं।

महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जन्म जयंती और आर्य समाज के 150 वें स्थापना दिवस को हम विशेष रूप से मनाएंगे। श्री विनय आर्य जी ने सुरेन्द्र कुमार आर्य जी के पारिवारिक पृष्ठभूमि का वर्णन करते हुए उनके नानाश्री पं. फूलचन्द शर्मा निडर के विषय में विस्तार से बताया और जे.बी.एम. ग्रुप द्वारा संचालित देश-विदेश में फैले उद्योग की जानकारी दी।

200वें जन्मदिवस एवं 150वें स्थापना दिवस की योजना को क्रियान्वित करने के लिए विचार मंथन करते हुए सभा प्रधान श्री सुरेशचंद्र आर्य जी ने कहा कि आर्य समाज की शक्ति आर्य विद्यालय, गुरुकुल, कन्या गुरुकुल एवं अन्य शिक्षण संस्थानों के रूप में समाहित हैं, हमें अपनी शक्ति को जागृत करने के लिए तथा समाज में नवचेतना जगाने के लिए शिक्षण संस्थानों में शिविरों के आयोजन करने चाहिए। छोटी-छोटी पुस्तकें ट्रैक्ट के रूप में वितरित करनी चाहिए।

जगह-जगह शिक्षाप्रद होर्डिंग्स बैनर लगाए जाने चाहिए कार्यक्रम की भव्यता और सफलता के लिए विशेष रूप से विचार करना चाहिए।

श्री सुरेंद्र रैली जी जी ने कहा कि अच्छे ट्रेक्ट तैयार किए जाएं, अच्छा प्रचार प्रसार किया जाए तो उससे सफलता अवश्य मिलेगी।

मंत्री श्री प्रकाश आर्य जी ने सभा के कोष में वृद्धि के विषय में विचार व्यक्त करते हुए कहा की प्रांतीय सभाओं को सभा की देय पंचमांश जोकि वैधानिक राशि है अवश्य देनी चाहिए। इसके साथ-साथ सार्वदेशिक सभा के सहयोग के लिए मासिक अथवा वार्षिक सहयोग राशि के रूप में संकल्प लेना चाहिए।

श्री दीनदयाल गुप्ता जी ने बंगाल सभा की ओर से 1100000 रुपए का वार्षिक सहयोग देने की घोषणा की। जिसका सभी महानुभावों ने तालियां बजाकर स्वागत किया। श्री किशन लाल गहलोत जी ने 100000 वार्षिक देने की घोषणा की, दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने 500000 राशि वार्षिक सहयोग के रूप में देने की घोषणा की। इस क्रम में हरियाणा सभा एवं अन्य सभाओं ने विचार-विमर्श करके सहयोग राशि प्रदान करने का आश्वासन दिया।

जेबीएम ग्रुप के चेयरमैन श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में हर व्यक्ति, हर कार्यकर्ता स्वयं को मजबूत टीम समझे और लीडर के रूप में काम करे तो हम इन आयोजनों को उपयोगी और भव्य बना पाने में कामयाब होंगे। स्वामी सुमेधानंद जी ने महर्षि दयानंद जी के 200 में जन्मोत्सव के लिए 200 की संख्या पर विशेष बल देते हुए कहा की दो सौ वेदपाठी, 200 यजमान,

- शेष पृष्ठ 6 पर

200वीं जन्मजयन्ती एवं आर्यसमाज के 150वें स्थापना दिवस के आयोजन हेतु गठित मार्गदर्शक समिति के अध्यक्ष्य बनाए जाने पर श्री सुरेन्द्र आर्य जी को सम्मानित करते श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी साथ में हैं विनय आर्य जी, मा. रामपाल जी, प्रकाश आर्य जी, दीनदयाल गुप्त जी, स्वामी सुमेधानन्द जी, धर्मपाल आर्य जी एवं देवेन्द्र पाल वर्मा जी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक के अवसर पर लिया वृहद चित्र

आर्य जगत् के कर्मठ व्यक्तित्व डॉ. ब्रह्ममुनि जी का भव्य गौरव सम्मान समारोह सम्पन्न

सार्वदेशिक सभा की ओर से मन्त्री श्री प्रकाश आर्य एवं दिल्ली की ओर से महामन्त्री श्री विनय आर्य ने किया सम्मान

आर्य जगत् के तपस्वी कर्मठ समाज सेवी व्यक्तित्व डॉ. श्री ब्रह्ममुनि जी का भव्य अभिनंदन समारोह दिनांक 17 अप्रैल, 2022 को अपूर्व उत्साह के साथ संपन्न हुआ। इस भव्य समारोह में संन्यासी, वानप्रस्थी, विद्वान्, मनीषी, आर्य नेता तथा कार्यकर्ता बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

समारोह में आशीर्वाददाता के रूप में 104 वर्षीय तपस्वी संन्यासी पूज्य श्री स्वामी श्रद्धानंदजी सरस्वती की उपस्थिति रही। इस ऐतिहासिक समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री प्रकाश आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य, वैदिक विद्वान तथा परोपकारिणी सभा के संरक्षक श्री वेदपाल आर्य एवं ट्रस्टी श्री ओममुनि, आर्य भजनोपदेशक श्री दिनेश जी 'पथिक', पूर्व विधायक श्री शिवाजीराव पाटिल आदि उपस्थित थे।

डॉ. ब्रह्ममुनि जी के गौरव सम्मान समारोह के अवसर सम्मानित करते सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य, महामन्त्री श्री विनय आर्य, सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह, श्री दयाराम बसैये जी एवं अन्य अतिथि एवं अधिकारी महानुभाव

सम्मान समारोह के अवसर पर सम्बोधित करते डॉ. वेदपाल जी, श्री प्रकाश आर्य जी, डॉ. सत्यपाल सिंह जी, डॉ. वाघमारे जी एवं धन्यवाद करते डॉ. ब्रह्ममुनि जी

इस अवसर पर डॉ. सत्यपाल सिंह जी ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में कहा कि डॉ. ब्रह्ममुनि जी जैसे त्यागी एवं तपस्वी महात्मा का सम्मान करना मानो आर्योचित सद्गुणों व सत्कर्मों का गौरव है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री प्रकाश जी आर्य ने ब्रह्ममुनि जी का ऊर्जावान जीवन सभी के लिए प्रेरणास्रोत बताया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनयजी आर्य ने कहा- श्री ब्रह्ममुनि जी का सरल व सादगीपूर्ण जीवन अपूर्व साधना व कठोर तपस्या से ओतप्रोत है। श्री विनय जी ने इस अवसर पर मुनि जी की गौरवनिधि में अधिकाधिक सहयोग देकर इस राशि को बढ़ाने का भी आह्वान किया। आचार्य डॉ. वेदपाल जी ने कहा कि मुनि जी के त्यागपूर्ण जीवन के कारण ही महाराष्ट्र में आर्यसमाज का काम व्यापक रूप से बढ़ता जा रहा है।

पूज्य स्वामी श्रद्धानंद आशीर्वाद देते हुए कहा कि मेरे इस शिष्य को परमपिता परमेश्वर अधिकाधिक आयु प्रदान करें, जिससे हम सभी को उनका निरंतर मार्गदर्शन मिलता रहे । अध्यक्षीय समापन भाषण में डॉ. श्री जे. एम. वाघमारे जी ने कहा कि हैदराबाद स्वतंत्रता आंदोलन में आर्य समाज ने बहुत बड़ा योगदान दिया है। इसी भूमि में अनेकों आर्य नेता एवं प्रचारक भी हुए, जिन्होंने महर्षि दयानंद की विचारधारा को सामान्य जनता तक पहुंचाने में अपना सर्वस्व लगाया।

गौरवमूर्ति श्री ब्रह्ममुनि जी ने उपस्थित दर्शकों को संबोधित करते हुए कहा कि मेरा जीवन साधु-महात्माओं के सान्निध्य से बना है। उन्हीं के मार्गदर्शन के फलस्वरूप मैं जीवन में कुछ कर पाया हूं। विज्ञान का विद्यार्थी होने के कारण

गौरव सम्मान के अवसर प्रकाशित अभिनन्दन ग्रन्थ स्मारिका का विमोचन

मैं वैदिक विचारधारा के साथ उसका समन्वय स्थापित करता रहा। मेरी दृष्टि में भौतिक विज्ञान एवं आध्यात्मिक ज्ञान-विज्ञान का सुंदर समन्वय होना चाहिए, जिससे सारा संसार वेदों की ओर आकृष्ट होगा। आज के परिप्रेक्ष्य में आर्य समाज की व्यापकता, वैज्ञानिकता एवं कल्याण कारी विचारधारा को फैलाने की सर्वाधिक आवश्यकता है। मैं सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए आभार व्यक्त करता हूं।

इस समारोह में सांसद डॉ. प्रीतम मुंडे, पूर्व विधायक, श्री पाटिल एवं अन्यों ने भी मार्गदर्शन किया। मंच पर उद्योगपति श्री शेखरजी देसरडा, स्वाधीनता सैनिक श्री आनंदमुनि जी सोममुनिजी, दयाराम बसैये, ओमप्रकाशजी होलीकर, पं. राजवीरजी शास्त्री, दिलीप जी वेलानी, वैद्यकीय अधिकारी डॉ. श्री राजेंद्र सूर्यवंशी, डॉ. अशोकजी थोरात, महाराष्ट्र मंत्रालय के उपसचिव श्री नामदेवजी गुट्टे, राज्य जल संधारण विभाग के सचिव श्री वैजनाथजी से चिल्ले, वैज्ञानिक डॉ. श्री बी.एम. मेहेत्रे, उग्रसेन जी राठौर, जुगल किशोर लोहिया, व्यंकटेश हालिंगे, मधुसूदन काले आदि उपस्थित थे।

इस समारोह के उपलक्ष में दो दिनों तक प्रतिदिन अलग-अलग सत्रों में विभिन्न कार्यक्रम चलते रहे। प्रात: काल विश्व शांति यज्ञ, सवेरे दोपहर एवं रात्रि में विविध विषयों पर सम्मेलनों का आयोजन हुआ, जिसमें वैदिक विद्वान आचार्य डॉ. श्री वेदपालजी, श्री ओममुनि जी, पं. राजूवीर शास्त्री तथा अन्यों ने मार्गदर्शन किये। तीनों दिनों तक आर्य भजनोपदेशक पंडित श्री दिनेशजी 'पथिक' ने मधुर स्वरों में भजनों की अमृतवर्षा की! सम्मेलन सत्रों में सर्वश्री डॉ. वीरश्री आर्य, डॉ. अरुण चौहान, व्यंकटेशजी हालिंगे, आचार्य सत्येंद्र जी, लक्ष्मणराव आर्य गुरुजी, डॉ. अखिलेश जी शर्मा, डॉ. वीरेंद्र जी शास्त्री आदियों संचालन का कार्यभार संभाला।

कुल मिलाकर तीनों दिनों के कार्यक्रम बहुत ही सफलता के साथ संपन्न हुए। अंतिम दिन उपस्थित श्रोताओं की उपस्थिति काफी दिखा दी। कोरोना की बीमारी के कारण लगभग तीन वर्षों के बाद कार्यक्रम का आयोजन होने से महाराष्ट्र के विभिन्न जिलों के साथ ही कर्नाटक, तेलंगाना, मुंबई आदि जगह से लोग भारी संख्या में पधारे थे। प्रांतीय सभा के पदाधिकारियों, सदस्यों तथा आर्य समाज परली के कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम को अपूर्व सफलता के शिखर पर पहुंचाया।

Indian And Plaestinian Religions

Last 4 Chapter

Continue From Last issue

In the following four chapters, the subject of discussion is the various distortions in the true form of the Vedic teachings, which crept in, due to various reasons. Four of them deal respectiuely with : Distortions due to Puranas, and due to Buddha and Jain philosophies, Christianity, and Islam. We shall see in the following lines how all this happened due to lack of understanding in the context of Vedic teaching.

-: Eleventh :-

Puranic Distortions

The first and foremost such of distortion was regarding the Caste-system. Vedas proclaimed the division of the society in four broader categories, according to the nature and work of the people concerned. But after Mahabharata, the ignorant priests and the other people of three higher classes, i.e. from amongst the socalled educated classes, proclaimed this system to perpetuate on the basis of one birth. Thus, once a Brahmin was declared to be a Brahmin for generations to come. This was all due to their vested interests. By adopting the Vedic teaching, we must get rid of this sinful custom and revert to the old practice of dividing the society on the basis of their specialisation, attributes, and nature, that will create a better order.

All other corrupt customs andpractices, known by different names, were started just to detract the people from the right path, so that the monopoly of a few ignorant people was not broken by the awakened people. Vamamarga, Bhairavamata, Shaktadharma etc. are such distortions only. Even the later form of Vedanta resulted from such ignorance. It appears as though Shankaracharya originally wanted to restore the purity of Vedic ideology, But because he had to counter the atheistic theories of the Charavakas, Bauddhas, as well as the apparently theistic ones of the Jainas, all of whom declared Brahman as a non-reality, while they declared Jiva and Prakriti as the only realities, he proclaimed just the reverse; 'Only the Brahman is realily, both the other being his own creations and thereby false and unreal'. But due to shortage of time he could not proclaim these corrections as desired originally, and his theories remained in that distorted original form, which was only conceived as a device ; even though he succeeded in his original mission of uprooting the atheistic ways from Indian Soil.

Some other such Unvedic distortions are : Use of Bhasma and Rudraksha, importances attributed to different Tirthas, Incarnation-theories, imagination of different Gods Idol-worship, Donation of Cows and Pindadana, etc. which was all against the Vedic way of life and the result of ones own ignorance and also of the vested interets.

-: Twelfth :-

Charavak, Baudha and Jain

There are three important atheistics religions, coming down from very old times in India. Chravaka is the oldest of them, the other two being Bauddha and Jaina. From amongst them, Charavak and Bauddhas do not believe in any type of God. For Charavaka even Jiva is also the product of a Physical process, and lasting till the end of the Physical activity alone. Bauddhas improved a little and proclaimed Jiva different from the matter. though based on the latter ultimately trying to release himself from this. entanglement and gaining 'enlightenment' and thereby getting 'Nirvana'.

The Jainas diftered in one respect: they believed 'Atman and 'Paramatman' as two different states of the same element, the former becoming the latter, through great penance and by following right path, through obser- vance of certain norms, which were equally acceptable in Vedic ideology, and were known as Yamas. Bauddhas, as. well as Jainas, both believe in the theory of rebirth, and both proclaim that Jiva ends its lower status once for all. after it gets 'Nirvana' or the status of 'Paramatma', respectively. How the salvation can be eternal for Jiva, who. himself wanders between birth and death ?

To be continued.....

With thanks : "Flash of Truth"

by Satyakam Verma :

Abridged form of

'Satyarth Prakash' by

Maharishi Dayanand Saraswati

पृष्ठ 4 का शेष

आजादी के अमृत महोत्सव पर होंगे ....

200 शोभायात्रा, 200 स्मृति स्थान, 200 वानप्रस्थी, 200 संन्यासी। इस तरह से दो सौ की संख्या पर काम करने से 200वीं जन्म जयंती यादगार बन जाएगी।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी ने महर्षि दयानंद द्विजन्म शताब्दी महोत्सव की शीघ्र विस्तृत कार्य योजना तैयार करने की बात कही। दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के उपरांत प्रांतीय, जिला एवं इकाई स्तर पर भी आयोजन संबंधी कार्यशालाओं के आयोजन का निर्देश दिया। बैठक में सभी प्रांतों के अधिकारियों ने अपने-अपने सुझाव दिए जिन्हें विधिवत अंकित किया गया और सभी के सुझाव पर विचार करने का बात कही गई। यह बैठक दो सत्रों में चली जिसमें गहन चिंतन मनन किया गया और आगामी फरवरी 2023 से लेकर अक्तूबर 2025 तक महर्षि जन्मोत्सव और आर्यसमाज के स्थापना दिवस के विशेष आयोजन की रूपरेखा तैयार की गई। बड़े ही प्रेम और सौहार्द के वातावरण में सभी कार्यक्रमों पर विचार विमर्श किया गया जो भविष्य में कार्य योजनाओं के रूप में सबके सामने आएगा।

- प्रकाश आर्य, मन्त्री

आवश्यकता है

आर्यसमाज के अखिल भारतीय स्तर पर संचालित होने वाले विभिन्न सेवा प्रकल्पों के लिए निम्न पदों के लिए आवेदन आमन्त्रित हैं-

1. **डी.टी.पी. ऑपरेटर - 2 पद**
2. **हिन्दी-अंग्रेजी टाईपिस्ट - 2 पद**
3. **ग्राफिक डिजाइन -2 पद**
4. **क्षेत्रीय संवाददाता -10 पद**
5. **प्रोड्युशर डायरेक्टर - 2 पद**
6. **विद्यालय प्रबन्धक -2 पद**
7. **सिविल इंजीनियर -1 पद**
8. **साइट इंजीनियर - 1 पद**
8. **सम्वर्धक -10 पद**
9. **प्रचारक -10 पद**
10. **ड्राइवर -2 पद**
11. **सेवक -4 पद**
12. **पाचक - 2 पद**

सभी पदों के लिए अनुभवी योग्य उम्मीदवारों की आवश्यकता है। चयनित उम्मीदवारों को योग्यता एवं अनुभव के अनुसार वेतन सहित अन्य सुविधाएं दी जाएंगी। गुरुकुलीय पृष्ठभूमि/आर्यसमाज एवं वैदिक परम्पराओं से ओत-प्रोत अभ्यर्थियों को प्राथमिकता दी जाएगी। इच्छुक उम्मीदवार अपना बायोडाटा भेजें-

प्रेरक प्रसंग

बाबू काली प्रसन्न चैटर्जी

आप लाहौर से निकलने वाले प्रसिद्ध अंग्रेजी दैनिक के सहायक सम्पादक थे। बैठकर प्रवचन करते थे। खड़े होकर भी आप व्याख्यान दिया करते थे। घण्टों बोल सकते थे। प्रवचन के लिए तैयारी की आवश्यकता न थी, बस माँग होनी चाहिए उनका व्याख्यान तैयार समझो।

वे कहानियाँ तथा चुटुकुले घड़ने में सुदक्ष थे। उनके मित्र उनसे नये-नये चुटुकुले सुनने के लिए उन्हें घेरे रहते थे।

वेद, शास्त्र, उपनिषद् का अच्छा स्वाध्याय था। हिन्दी अंग्रेजी, पंजाबी सबमें धाराप्रवाह बोल सकते थे। बंगला पर तो अधिकार था ही। उनके व्याख्यान सुनने के लिए लोग बहुत उत्सुक रहते थे।

एक व्याख्यान में उन्होंने एक रोचक बात कही। उन दिनों पंजाब के स्कूलों में कलकत्ता के पी. घोष का गणित, एलजबरा तथा रेखागणित पढ़ाया जाता था। जब पी. घोष मरा तो आपने अपने एक भाषण में कहा कि यदि पी. घोष कुछ पूर्व मर जाता तो वह (काली प्रसन्न चैटर्जी) भी मैट्रिक पास हो जाते। उनके इसी व्याख्यान से लोगों को पता चला कि काली प्रसन्नजी दसवीं पास नहीं। गणित न आने के कारण वे मैट्रिक में रह गये।

स्कूली शिक्षा इतनी स्वल्प होने पर भी एक पत्रकार के रूप में आपके लेखों की धूम थी। आपकी पढ़े-लिखों में धाक थी। एक समाजसेवी के रूप में आपकी कीर्ति थी। आर्यसमाज में आप बहुत प्रतिष्ठित समझे जाते थे।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट

427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph. :011-43781191, 09650522778

E-mail : aspt.india@gmail.com

पृष्ठ 2 का शेष

करांची हमले के बाद फिर जिहाद पर ....

जब इन घरों के बच्चें बगदादी ओसामा जैसे पढ़े-लिखे आतंकियों के बारे में सुनते हैं या उनकी स्पीच सुनते हैं तो उनका अपने आप झुकाव होने लगता है।

इसमें भी कई चीजें सामने आई। एक तो यह कि इन पढ़े लिखे युवाओं के पास तकनीकी दक्षता होती है। दूसरा इन्हें जॉब ऑफर की जाती है। तीसरा इनका माइंड ये कहकर वाश किया जाता है कि तुम पढ़ लिखकर मजहब के लिए क्या कर रहे हो। इसी कारण 21 वर्ष की उम्र में ये लोग आतंकी सोच की ओर आकर्षित होने लगते हैं।

अब बचा गरीब मुसलमान! लेकिन ये फिदायीन तैयार करने का तरीका नया नहीं है। इसमें फिदाईन तैयार करने वाले, पहले किशोर या जवानों को ढूंढा जाता है। फिर इनसे सवाल किये जाते हैं, आपने दीन के लिए क्या किया, या क्या कर रहे हैं? आखिरत के बाद जब तुम्हारा हिसाब किताब होगा तब अल्लाह को क्या जबाब दोगे?

इसके बाद इन युवाओं को विश्व में कहीं भी कोई घटना होती है, उसके चित्र मजलूमों पर होने वाले 'जुल्म' यह कह कर दिखाए जाते हैं कि 'देखों! मुसलमानों पर कितने जुल्म हो रहे हैं, क्या तुम इसे सह लोगे?'

तब उनका उत्तेजना से भरा उत्तर होता है, नहीं! अब मौलाना आवाज और तेज करते जातें हैं। कच्चे दिमाग के पूरी तरह ट्रांस में आ जाने बाद उन्हें छांटकर अलग कर लिया जाता है। अब छांटे गये युवकों के दिमाग में ख़ास आवाज में जुनून कुछ कर गुजरने का भाव भरा जाता है। इन्हीं में आँखों में सुर्खी देखकर फिदायीन छांट लिया जाता है।

अब यहाँ से उनको जन्नत का ख्वाब दिखाया जाता है। क्या तुम जन्नत जाना चाहते हो? तुम्हें आखिर तक कब्र में इंतजार करना पड़ेगा? लेकिन दीन के नाम पर कुर्बानी देने वाले शहीदों के लिए जन्नत के दरवाजे सदैव खुले रहते हैं।

अगर कोई यहाँ भी पूरा तैयार नहीं होता, तब मौलाना समझाते हैं कि तुम आम औरतों को देखते हो जन्नत में गजब की खूबसूरत हूरें हैं। वह सत्तर तरह के लिबास बदलती हैं। अश्लीलता से भरी उनके जिस्म की नुमाइश कर कहा जाता है, तुम्हें बहत्तर हूरें मिलेंगीं, जेहाद करो फिदायीन बनों, शहीद के लिए जन्नत का रास्ता खुला है। कच्चा दिमाग सोचता है, इतना शुभ अवसर हैं जन्नत पाने का लम्बा इंतजार क्यों किया जाएँ? दीन के नाम पर शहादत और जन्नत का शॉर्ट कट, सभी सवाल दब जाते हैं और कोई भी आम मुसलमान जिहादी बन जाता है।

अब मानसिक रूप से तैयार हो जाने के बाद उन्हें सबसे अलग कर पूरी तरह जनूनी बनाने के लिए लगातार टेप सुनाये जाते हैं। दूसरी तरफ मौका मिलने के बाद फिदायीन पर कुर्बानी का रंग चढ़ा कर बाहर लाया जाता है। वह मरने के लिए इतना उत्तेजित होता है। उसे यह संसार, सभी रिश्तेनाते बेमानी लगते हैं। अक्सर गाड़ी में खतरनाक ज्यादातर आरडीएक्स भरकर शरीर पर भी टाईम बम लगा कर छोड़ देते हैं। जाओ! निर्दोषों को मारो, जन्नत में तुम्हारा इंतजार हो रहा! इस लालच में एक मुसलमान जिहादी बन जाता है। लेकिन वह मरने से पहले कभी मौलाना से सवाल नहीं करता कि अगर इतना कुछ है तो वह मौलाना या उसके बच्चें कभी जिहादी क्यों नहीं बनते? - ***सम्पादक***

शोक समाचार

श्री शिवदत्त आर्य जी का निधन

हरियाणा आर्य वीर दल के कर्मठ कार्यकर्ता श्री शिवदत्त आर्य जी दिनांक 27 अप्रैल, 2022 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 30 अप्रैल, 2022 को आर्य विद्या मन्दिर स्कूल, सैक्टर-7, गुरुग्राम में सम्पन्न हुई।

श्रीमती माधुरी जी का निधन

आर्यसमाज नौरोजी नगर के संक्षरक श्री राजीव कुमार जी की धर्मपत्नी एवं आर्यसमाज की सदस्या श्रीमती माधुरी जी का दिनांक 14 अप्रैल, 2022 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार उसी दिन गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियों द्वारा पूर्ण वैदिक रीति के साथ ग्रीन पार्क शमशान घाट पर कराया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 25 अप्रैल को उनके निवास पर सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परम एपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

पृष्ठ 3 का शेष

जीवन में संगति का महत्व

मनुष्य के सर्वनाश का कारण बनती है कुसंगति। वात्सल्य और करुणामयी कैकेई को मन्थरा की कुसंगति मिल जाने से उसके मन की स्थिति बदल गई। रामजी के प्रति बहुत लगाव था, मगर बुरी संगति के कारण मन में वैर उत्पन्न हुआ और पूरी अयोध्या के लिए शोक पैदा कर दिया। एक ही बुरा व्यक्ति पूरे परिवार, समाज और देश को तहस-नहस कर देता है, कैकेई विधवा हो गई, रोकर चौदह वर्ष बिताए।

जुआरी, शराबी और बुरे लोग अपनी संगति में जल्दी शामिल कर लेते हैं। जुआरी की पहली जीत सबसे बड़ा अपराध है। मंथरा हो या शकुनी एक ही काफी है घर बिगाड़ने के लिए। एक बुरा व्यक्ति जिन्दगी में आ जाए, उसके साथ न जाने कितने और इकट्ठे होते जाते हैं। समाज में न जाने कितने शकुनी हैं, कितनी मन्थरा हैं, उनकी संगति से बचें। कुसंग से व्यक्ति की मति, कीर्ति और गति नष्ट हो जाती है। बुरी संगति आपसे सब कुछ छीनती है।

कुसंग सदैव त्याज्य है। कुसंग क्या है?जो तुम्हें तुमसे दूर कर दे। जिसका व्यवहार शुरू में सुखदाई हो और बाद में दुःखदाई हो। जो तुम्हारे आनन्द को तुमसे छीन ले वह कुसंग है। शराबी का संग मिले, शुरू में सुख मिलेगा, बाद में आप उसके बिना रह नहीं सकते। कुसंग का रास्ता ही दुःख देने वाला है, आप अपने नियन्त्रण में नहीं रहे तो दूसरे बुरे लोग आपको नचाएंगे और आप कसमें खाएंगे, फिर तोड़ेंगे। जो आपकी विवेक शक्ति छीन ले, वह कुसंग है। जिसके मिलने से विवेक जाग जाए वह सत्संग है।

समाज में तरह-तरह की वृत्तियों वाले लोग हैं, एक वह है जिनके पास निराश जाएंगे, मुस्कराते, गुनगुनाते आएंगे और एक वह हैं जिनके पास मुस्कराते जाएंगे भुनभुनाते वापिस आएंगे। प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसके जीवन में आनन्द के फूल खिले रहें, उसके लिए सत्य का संग जरूरी है। जहां से जागृति आए ,जीवन में जो सही दिशा की ओर लेकर जाएगा वह है सत्संग। सत्संग के लिए हजार काम भी छोड़ने पड़ें तो छोड़ देना।

सत्संग ईश्वर की कृपा से ही प्राप्त होता है, किन्तु कुसंग में न रहना तो अपने हाथ की बात है। जीवन में मां-बाप का चुनाव तो आप नहीं कर सकते, जैसे रिश्ते-नाते भगवान ने दिए उनको स्वीकार करें, लेकिन संगति का चुनाव करने में आप स्वतन्त्रा हैं। इसलिए मित्रों का चुनाव करने में आप पूरी सावधनी बरतें।

कोई भी मनुष्य जन्म से भ्रष्ट नहीं होता, जन्म के समय वह बहुत भोला और निर्व्यसनी होता है, उसमें न तो कोई बुरी आदत होती है और न कोई अभिमान होता है। बड़ा होने पर जैसा संग मिलता है, वैसा ही उसका जीवन बनने-बिगड़ने लगता है। बच्चा जैसे लोगों के बीच बैठता है, वैसा ही उसके जीवन में प्रभाव आता है। किसी के साथ बैठते-बैठते आपका बच्चा खराब हो जाए, आपकी नहीं मानता, दूसरों की मानता है, तो बदला क्या? संगति बदली। मां-बाप के संस्कारों का, परिवार का, समाज का, वातावरण का और संगति का बच्चों पर बहुत प्रभाव पड़ता है।

आयु के जिस भी भाग में जागृति आए, कुसंग का त्याग जरूर करें। विदुरजी ने धृत्तराष्ट्र को बहुत समझाने की कोशिश की, पर जब उन्होंने देखा कि इस व्यक्ति के संग से मेरा जीवन भी भ्रष्ट हो जाएगा। यह सोचकर उन्होंने गृहत्याग किया था और तीर्थ-यात्रा करने चले गए थे, क्योंकि वह कुसंग में रहना नहीं चाहते थे। संग का रंग मन को लगता जरूर है। सत्संग से जीवन में उजाला होता है और कुसंग से अंधकार छा जाता है।

जीवन में यदि छोड़ने योग्य कोई चीज है तो मनुष्य को कुसंग छोड़ना चाहिए। जैसे छुआछूत की बीमारी लगती है, ऐसे ही अच्छे आदमी की अच्छाई भी उड़कर लगती है। खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है। अर्थात् संगति का प्रभाव तो आता ही है। जिन्होंने जीवन की ऊंचाइयों को छूने के लिए आध्यात्मिक मार्ग चुना। उन जागृत महापुरुषों का सान्निध्य प्राप्त करें।

हर व्यक्ति का आभा-मण्डल एक-दूसरे से टकराता है। जिसका आभा-मण्डल बहुत प्रबल है—वह महापुरुष है, वह उपदेश न भी दे, उनके पास बैठने से जिन्दगी की धराएं बदल जाती हैं। दुनिया में क्रूर लोगों की जीवन धरा सत्संग से बदली। मानव चोला बहुत कीमती है, इसे दुनिया की झूठी चमक- दमक में बर्बाद न करें। कुसंगति से बचें, सत्संगति करें। तभी मानव जीवन सार्थक है।

- आचार्य अनिल शास्त्री

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय शिविर रोजड़ में

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का वार्षिक राष्ट्रीय शिविर 2022 इस बार आर्य वन रोजड़, गुजरात में 29 मई से 5 जून, 2022 तक लगाया जाएगा। इसमे भाग लेने के लिए 14 वर्ष से अधिक आयु की आर्य वीरांगनाएं दिनांक 15 मई, 2022 तक अपने नाम शीघ्र लिखवा देवें ताकि व्यवस्था सुचारु रूप से हो सके।

- सचिव, मो. 9910234595

-: खेद व्यक्त :-

खेद है कि प्रिंटिंग मशीन (प्रैस) खराब हो जाने के कारण साप्ताहिक आर्यसन्देश का गत अंक वर्ष 45 अंक सं. 27 दिनांक 2 मई से 8 मई, 2022 प्रकाशित नहीं हो सका। पाठकों को हुई असुविधा के लिए सम्पादक मंडल खेद व्यक्त करता है। *- सम्पादक*

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज रेलवे रोड शकूर बस्ती दिल्ली-110034

प्रधान : श्री सोमनाथ पुरी
मन्त्री : श्री मदनलाल अरोड़ा
कोषाध्यक्ष : श्रीमती रेखा शर्मा

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 9 मई, 2022 से रविवार 15 मई, 2022

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 11-12-13/05/2022 (बुध-वीर-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 11 मई, 2022

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली ने मनाया महात्मा हंसराज जन्मोत्सव

इस वर्ष आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य एवं आर्य समाज ग्रेटर कैलाश -1 के तत्वावधान में दिनांक 24 अप्रैल , 2022 को महात्मा हंसराज जन्मोत्सव उत्साह पूर्वक मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य वीरेन्द्र विक्रम जी रहे, इस कार्यक्रम में उपस्थित आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य के

महामंत्री आर्य सतीश चड्ढा जी ने महात्मा हंसराज जी के जीवन पर प्रकाश डाला। अमृत पॉल आर्य शिशु शाला के बच्चों ने सुन्दर प्रस्तुति महात्मा हंसराज के जीवन पर प्रस्तुत की। तत्पश्चात् आर्य समाज के प्रबुद्ध विद्वान डॉ. महेश विद्यालंकार जी ने महात्मा हंसराज जी के द्वारा किए गए शिक्षा में योगदान के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि उनका जन्म 19 अप्रैल, 1864 को पंजाब प्रांत के होशियारपुर में साधारण परिवार में जन्म लिया, पिता की असामयिक मृत्यु के कारण अपने बड़े भाई के साथ लाहौर आ गए। वहाँ पर उन्होंने बी.ए. की परीक्षा पास की और राज्य में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। वर्ष 1877 में ऋषि दयानन्द का आगमन हुआ अपने भाई मुलकराज के साथ प्रवचन सुनने गए और इतने प्रभावित हुए को उनकी जीवन धारा ही बदल गई। उन्होंने राजकीय सेवा में न जाने का निर्णय लिया और सादगी सेवा और त्याग का जीवन ग्रहण किया। महर्षि दयानन्द जी की सन् 1883 में मृत्यु उपरान्त श्रद्धाजलि सभा में डी.ए.वी. विद्यालय आरम्भ करने का निर्णय लिया गया। महात्मा जी 22 वर्ष की आयु में अवैतनिक मुख्याध्यापक का पद ग्रहण किया तथा महाविद्यालय में भी प्रधानाचार्य के रूप में कार्य किया। आर्य समाज में शुद्धि के लिए भी उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। इस कार्यक्रम में दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के प्रधान, श्री रविदेव गुप्ता जी के कुशल मंच संचालन ने कार्यक्रम को गति दी, उन्होंने सभी उपस्थित श्रोतागणों को धन्यवाद किया। अन्त में शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ तथा सभी के लिए जलपान की व्यवस्था की गई थी।

प्रतिष्ठा में,

रेलवे स्टेशनों पर भी खुलेंगे वैदिक साहित्य प्रचार स्टाल

आर्यसमाज के युवा कार्यकर्ताओं को मिलेगा स्वरोजगार का अवसर

मिर्जापुर, फतेहपुर, अलीगढ़, झांसी, ग्वालियर, मथुरा, आगरा के निकटवर्ती क्षेत्रों के इच्छुक आर्य महानुभाव सम्पर्क करें

आर्य समाज के प्रचार-प्रसार और विस्तार के लिए प्रयासरत दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा काफी लंबे समय से कोशिश की जा रही थी की भारतीय रेलवे स्टेशनों पर वैदिक साहित्य के स्टाल लगाए जाएं, जिनके माध्यम से महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं को, वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों को तथा आर्य समाज के सिद्धान्त, मान्यता और और परम्पराओं को जन-जन तक पहुंचाया जाए। इसके लिए सभा ने रेलवे के कार्यालय में सारी औपचारिकता पूर्ण की। परिणामस्वरूप सभा की अपेक्षित योजना सफल हुई और नार्थ सेंट्रल रेलवे के **मिर्जापुर, फतेहपुर, अलीगढ़, वीरांगना लक्ष्मीबाई जंक्शन झांसी, ग्वालियर, मथुरा, आगरा फोर्ट तथा आगरा कैंट** के कुल 10 प्लेटफार्मों पर वैदिक साहित्य बिक्री केन्द्र (बुक स्टाल) खोलने की स्वीकृति प्राप्त हो गयी है। वैदिक साहित्य स्टाल चलाने के इच्छुक आर्य युवा तथा आर्यवीर श्री सतीश चड्डा से मो. 9540041414 पर यथाशीघ्र सम्पर्क करें। – *महामन्त्री*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह